ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-6* Issue-4* July- 2021
Anthology : The Research

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन एवं सांस्कृतिक जागरण– बाल गंगाधर तिलक के विशेष संदर्भ में

Indian National Movement and Cultural Awakening - With Special Reference to Bal Gangadhar Tilak

Paper Submission: 05/07/2021, Date of Acceptance: 15/07/2021, Date of Publication: 24/07/2021

डिश्वर नाथ खुटे
सहायक प्राध्यापक
इतिहास अध्ययनशाला
पं. रविशंकर शुक्ल
विश्वविद्यालय, रायपुर,
छत्तीसगढ़, भारत

सारांश

1885 ई. में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस एक अखिल भारतीय राजनीतिक संस्था के रूप में स्थापित हुई। 1885 से 1905 ई. तक का समय उदारवादी युग के नाम से जाना जाता है। उदारवाद क्रमशः सुधार की नीति में विश्वास रखते थे लेकिन 20वीं सदी के प्रारंभ में 1905 ई. से भारतीय राजनीतिक क्षितिज पर भारत को राजनीतिक अधिकार देने एवं पूर्ण स्वराज की मांग और उसकी प्राप्ति हेतु जन आंदोलन के मार्ग को अपनाने वाली उग्र राष्ट्रवादी आंदोलन का जन्म हुआ। उग्र राष्ट्रीयता के उदय में बाल गंगाधर तिलक, लाला लाजपतराय, विपिन चंद्र पाल एवं अरविंद घोष का नेतृत्व महत्वपूर्ण रहा। इनमें तिलक को भारतीय उग्र राष्ट्रवाद का जनक माना जाता है तथा लोग उन्हें लोकमान्य और भारत का बेताज बादशाह कहते थे।

In 1885 A.D. the Indian National Congress was established as an all India Political Organization. The period from 1885-1905 A.D. is known as the liberal era. Liberlism believed in the policy of gradual reform but begining 20 th Century from 1905 A.D. a militant nationalist movement was born on the Indian political horizon, adopting the path of mass movement for giving political rights to India and demanding and achieving Purn Swaraj. The leadership of Bal Gangadhar Tilak, Lala Lajpat Rai, Bipin Chandra Pal and Arobind Ghosh was important in the rise of militant nationalism. Among these, Tilak is considered the father of Indian Nationalism and people called him Lokmanya and the Uncrowned King of India.

मुख्य शब्द : पुनर्जागरण , साम्राज्यवाद ,उदारवादी, उग्रराष्ट्रवाद , स्वदेशी, बहिष्कार।

Renaissance, Imperialism, Liberalism, Militant Nationalism, Swadeshi, Boycott.

शोध का उद्देश्य

1. 20 वीं सदी के प्रारंभ में भारत की राजनीतिक एवं सांस्कृतिक स्थिति को बताना।
2. भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में बाल गंगाधर तिलक के योगदान का मूल्यांकन करना।
3. भारत की जनता तथा भारत के लिये बाल गंगाधर तिलक द्वारा किये गये कार्यों का उल्लेख करना।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध पत्र में द्वितीयक स्रोत सामग्री का उपयोग किया गया है। राष्ट्रीय स्तर के प्रकाशित पुस्तकों का अध्ययन कर शोध पत्र तैयार किया गया हैं।

प्रस्तावना

18वीं शताब्दी में भारतीयों की आपसी फूट तथा दुर्बलता से लाभ उठाकर अंग्रेजों ने भारत में अपना राज्य कायम किये। ब्रिटिश साम्राज्य के भारत में विस्तार के बाद भारत का आर्थिक व राजनीतिक रूप से खूब शोषण हुआ। उस समय देश की सामाजिक, धार्मिक व सांस्कृतिक क्षेत्र में अव्यवस्था फैली हुई थी तथा जनता अंधकार में भटक रही थी। 19वीं सदी के पूर्वार्द्ध में इन अव्यवस्थाओं को सुधारने हेतु कुछ अग्रगण्य भारतीयों द्वारा सामाजिक व धार्मिक

जीवन में एक जागृति उत्पन्न हुई जिन्हें भारतीय पुनर्जागरण कहा जाता है।[1] भारत में पुनर्जागरण का संबंध औपनिवेश संघर्ष की कथा है। बिट्रेन की प्रचण्ड राजनीतिक शक्ति तथा सांस्कृतिक सामाज्यवाद के विरूद्ध प्रतिक्रिया के रूप में बंगाल में ब्रम्ह समाज, महाराष्ट्र में प्रार्थना समाज, उत्तर भारत में आर्य समाज एवं रामकृष्ण मिशन आदि का उदय हुआ।[2] इस पुनर्जागरण आंदोलन का सामाजिक, धार्मिक, साहित्यिक, कलात्मक व राजनीतिक क्षेत्रों पर व्यापक प्रभाव पड़ा एवं अंततः भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में वह प्रवाहित हुई और उसके विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

बाल गंगाधर तिलक

1885 ई. में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस एक अखिल भारतीय राजनीतिक संस्था के रूप में स्थापित हुई। 1885 से 1905 ई. तक का समय उदारवादी युग के नाम से जाना जाता है। उदारवाद क्रमशः सुधार की नीति में विश्वास रखते थे लेकिन 20वीं सदी के प्रारंभ में 1905 ई. से भारतीय राजनीतिक क्षितिज पर भारत को राजनीतिक अधिकार देने एवं पूर्ण स्वराज की मांग और उसकी प्राप्ति हेतु जन आंदोलन के मार्ग को अपनाने वाली उग्र राष्ट्रवादी आंदोलन का जन्म हुआ। उग्र राष्ट्रीयता के उदय में बाल गंगाधर तिलक, लाला लाजपतराय, विपिन चंद्र पाल एवं अरविंद घोष का नेतृत्व महत्वपूर्ण रहा। इनमें तिलक को भारतीय उग्र राष्ट्रवाद का जनक[3] माना जाता है तथा लोग उन्हें लोकमान्य और भारत का बेताज बादशाह कहते थे।[4]

प्रारंभिक जीवन

बाल गंगाधर तिलक का जन्म 23 जुलाई सन् 1856 को महाराष्ट्र के रत्नागिरी (बम्बई प्रेसीडेंसी) में चितपावन ब्राम्हण परिवार में हुआ था। उनका शिक्षा–दीक्षा पूना और बम्बई में हुआ। तिलक को संस्कृत, मराठी और अंग्रेजी भाषा का अच्छा ज्ञान था तथा हिन्दूधर्म में उनका अटूट विश्वास था। 1879 में उन्होंने कानून की डिग्री प्राप्त की।[5] बाल गंगाधर तिलक ने अपना अधिकांश समय अब सार्वजनिक सेवा में लगाने का निश्चय किया। उन्होंने विष्णु कृष्ण चिपलूनकर (विष्णु शास्त्री), आगरकर और एम. बी.नाम जोशी के साथ मिलकर 2 जनवरी 1880 ई. को पूना में न्यू इंग्लिश स्कूल खोला।[6] शिक्षा प्रसार की दृष्टि से पूना में स्थापित डैकन एजुकेशन सोसायटी और फर्ग्युसन कॉलेज की स्थापना में उनका प्रमुख योगदान था। फर्ग्युसन कॉलेज पूना में तिलक ने थोड़े समय के लिए गणित, कानून तथा संस्कृत का अध्यापन कार्य भी किया।[7]

राष्ट्रवादी नेता

बाल गंगाधर तिलक प्रथम राष्ट्रवादी नेता थे जिन्होंने जनता से निकट सम्बन्ध स्थापित करने का प्रयत्न किया और इस दृष्टि से वे महात्मा गांधी के अग्रगामी थे। इस उद्देश्य से उन्होंने अखाड़े, लाठी, क्लब तथा गौ हत्या विरोधी सोसायटियां स्थापित की जिससे वे लोग देश की आजादी के लिए कुर्बानी कर सकें। उन्होंने सन 1893 में गणपति उत्सव तथा सन 1895 में शिवाजी उत्सव आरंभ किये ताकि जनता में धार्मिक शिक्षा व देश प्रेम का उत्साह तथा साहस एवं अनुशासन की भावना जागे और भारत को विदेशियों की राजनैतिक दासता से छुटकारा दिलाया जा सके।[8] शिवाजी ने अफजल खां की जो हत्या की थी, उसके बारे में तिलक ने कहा था– ''शिवाजी ने अच्छे आशय से दूसरों से लाभ के लिए अफजल खां की हत्या की थी। अगर हमारे मकान में चोर घूसे और हममें उन्हें भगाने की ताकत न हो तो हमें निस्संकोच उन्हें बन्द कर देना चाहिए और जिन्दा जला देना चाहिए।[9]

1881 ई. में तिलक ने अपने विचारों के प्रसार के लिए दो सप्ताहिक समाचार पत्रों– अंग्रेजी में 'द मराठा' और मराठी में 'केसरी' का प्रकाशन शुरू किया। इन समाचार पत्रों के द्वारा उन्होंने भारतीय जनमानस में देश भक्ति के भावों का संचार किया तथा ब्रिटिश शासकों की आलोचना करते हुए उग्रराष्ट्रवाद के पुरोधा के रूप में राष्ट्रीय चेतना को जगाया।[10]

1882 में उन्हें ब्रिटिश सरकार ने 4 मास का कारावास दिया था, क्योंकि उन्होंने अंग्रेजों द्वारा कोल्हापुर के महाराजा के प्रति धृष्टता करने पर कड़े शब्दों में निन्दा की थी।[11] 1890 ई. में बाल गंगाधर तिलक दक्षिण शिक्षा समिति से अलग होकर कांग्रेस में सम्मिलित हो गए। उन्होंने कांग्रेस की उदारवादी नीति का विरोध किया। तिलक जी प्रथम कांग्रेसी नेता थे जो देश के लिए अनेक बार जेल गए।

1896 ई. में पूना तथा बम्बई में प्लेग की भयंकर बीमारी फैली थी तथा अकाल पड़ा था। सरकार अकाल जनित संकटों व प्लेग की रोकथाम करने में असफल रही। इससे जनता में बड़ा असन्तोष फैला। तिलक ने अपने समाचार पत्रों के द्वारा सरकार के गलत तौर तरीकों की कटु आलोचना की। इस प्रकार के राजनीतिक–सामाजिक उद्वेलित वातावरण में चापेकर बंधुओं ने प्लेग कमिश्नर रैण्ड तथा अंग्रेज अधिकारी आयर्स्ट की हत्या कर दी थी। ब्रिटिश सरकार ने इसके लिए तिलक को दोषी ठहराया तथा 1897 में उन्हें राजद्रोह का मुकदमा चलाकर 18 माह के कड़े कारावास का दण्ड दिया। नौ लोगों की जूरी द्वारा मुकदमें की सुनवाई की गई जिसमें 6 यूरोपियन तथा 3 भारतीय थे। सभी यूरोपियनों ने उन्हें दोषी ठहराया पर तीनों भारतीय सदस्यों ने तिलक को निरपराध माना।[12] इसके प्रतिक्रिया स्वरूप तिलक ने कहा कि– ''जूरी के निर्णय के उपरांत भी मैं यह कहना चाहता हूँ और यह घोषणा करता हूं कि मैं निर्दोष हूँ। इस सृष्टि में उच्च (ईश्वरीय) शक्तियां है जिनके द्वारा चीजों (घटनाओं) पर शासन किया जाता है और संभवतः यह ईश्वरेच्छा है कि मैं जिस उद्देश्य का प्रतिनिधित्व करता हूँ, वह मेरे मुक्त रहने की अपेक्षा मेरे कष्ट–वहन करने के कारण अधिक फलेगा–फूलेगा।''

1905 में लार्ड कर्जन द्वारा बंगाल का विभाजन किया गया जिसका बाल गंगाधर तिलक ने भी विरोध किया। बनारस कांग्रेस अधिवेशन 1905 में स्वदेशी व बहिष्कार आंदोलन के अनुमोदन का प्रस्ताव पारित किया गया तथा महाराष्ट्र में इसका संदेश फैलाने का कार्य तिलक ने सफलता पूर्वक किया। इस समय बनारस कांग्रेस अधिवेशन में कांग्रेस के अंदर वैचारिक मतभेद भी

उत्पन्न हुए। 1906 में उग्रवादी खेमा तिलक को अध्यक्ष बनाना चाहते थे किन्तु उदारवादियों ने दादाभाई नौरोजी को अध्यक्ष बनाया। 1906 के कलकत्ता अधिवेशन में उग्रवादियों ने स्वदेशी, बहिष्कार, राष्ट्रीय शिक्षा एवं शासन से संबंधित चार प्रस्ताव पास करवा ही लिये। स्वराज्य की प्राप्ति के लिए आंदोलन तथा अध्यक्ष पद के चुनाव हेतु उदारवादी एवं उग्रवादियों में काफी मतभेद हुए। उदारवादी रासबिहारी बोस को अध्यक्ष बनाने में सफल हुए। फलतः कांग्रेस 1907 में सूरत अधिवेशन में दो भागों में बंट गई। सूरत विभाजन के पश्चात् गरम दल (उग्रवाद) का नेतृत्व लाल, बाल, पाल (लाला लाजपतराय, बाल गंगाधर तिलक, विपिन चंद्रपाल) ने किया, जबकि नरम दल के नेता गोपाल कृष्ण गोखले हो गए। इस उग्रवाद विचारधारा के शिरोमणि लोकमान्य तिलक थे।[13]

20वीं शताब्दी के प्रारंभिक काल में भारत में सशस्त्र क्रांति की घटनाएं हुई। बम आदि का प्रयोग क्रांतिकारियों द्वारा अंग्रेजी तख्ते को पलटने की दृष्टि से भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में किया जा रहा था। 30 अप्रेल 1908 को बिहार की मुजफ्फरपुर के मजिस्ट्रेट किंग्सफोर्ड की हत्या का प्रयास प्रफुल्ल चाकी और खुदीराम बोस द्वारा किया गया जिसके बाद खुदीराम बोस को फांसी दी गई तथा प्रफुल्ल चाकी ने आत्महत्या कर की थी। इस समय केसरी समाचार पत्र में इन क्रांतिकारियों की देशभक्ति की सराहना की थी। अब अंग्रेजी सरकार को तिलक को फंसाने का सुनहरा अवसर मिल गया। उन्हें 1908 में राजद्रोह के अपराध में 6 वर्ष के कैद की सजा देकर निर्वासित किया गया था माण्डले (बर्मा) जेल भेज दिया गया।[14] इस प्रकार तिलक जी ऐसी यातनाओं को भी कर्मयोगी की तरह सहर्ष सहन करते हुए भारतीय स्वराज्य के लिए अपना जीवन समर्पित किया था।

तिलक को 1908 से 1914 तक बर्मा की मांडले जेल में 6 वर्ष काटने पड़े। जेल से रिहा होकर स्वदेश लौटने पर उन्होंने भारत के लोगों से प्रथम महायुद्ध में अंग्रेजी सरकार को ज्यादा मदद करने को कहा। वे दो वर्ष तक इस नीति पर चलते रहे, लेकिन ब्रिटिश अधिकारियों ने भारत के लोगों को होमरूल (स्वशासन) का आश्वासन नहीं दिया तो तिलक ने अंग्रेजी सरकार की आलोचना एवं विरोध करना शुरू किये।[15] बाल गंगाधर तिलक ने 1916 में एनीबीसेंट द्वारा संचालित होमरूल आंदोलन का समर्थन किया तथा वे भी प्रमुख प्रचारक बन गए। इसी समय उन्होंने घोषणा किया कि ''स्वराज्य मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहूंगा।'' इसी वर्ष उदारवादियों से समझौता के बाद तिलक कांग्रेस में पुनः प्रवेश लिये। यह तिलक का ही प्रयास था कि कांग्रेस और मुस्लिम लीग के बीच लखनऊ समझौता हुआ जिसमें दोनों दलों ने सम्मिलित रूप से भारत के लिए स्वराज्य की मांग की।[16]

एंग्लो इंडियन नौकरशाही तिलक को विद्रोही समझते थे। सर वेलेंटाइन शिरोल उन्हें भारत में अशांति का जन्मदाता समझते थे। तिलक ने शिरोल पर मानहानि का मुकदमा चलाया और उस उद्देश्य से इंग्लैंड भी गए। यद्यपि वे मुकदमा हार गए परन्तु इससे उचित प्रभाव हुआ।[17] ब्रिटिश सरकार द्वारा 1919 में मांटेग्यू चेक्सफोर्ड सुधार की घोषणा हुई थी। इनमें दिये गए सुधारों से तिलक जी संतुष्ट नहीं हुए उसे उन्होने अपर्याप्त एवं असंतोषजनक माना। भारतीयों के लिए वे अधिक से अधिक अधिकारों की मांग उठाते रहे। तिलक जी एक प्रकाण्ड विद्वान थे। उन्होंने वेदों की प्राचीनता के बारे में दो ग्रंथ लिखे जिनके नाम– औरायन तथा आर्कटिक होम आफ दि वेदाज है। जान हापकिन्स विश्वविद्यालय के डॉ. ब्लूमफील्ड ने औरायन को उस वर्ष का साहित्यिक क्षेत्र में सनसनी पैदा करने वाला ग्रंथ बताया था। इसी प्रकार तिलक ने ''गीता रहस्य'' की रचना मांडले जेल में की थी जिसे दार्शनिक विचारधारा की उनकी सबसे बड़ी देन मानी जाती है। इसमें पुराने विचार का खंडन किया था कि– मुक्त आत्मा का प्राणियों के प्रति कोई कर्तव्य नहीं रहता। इस प्रकार तिलक जी ने भारत के सामने एक नया आदर्श रखा और यह आदर्श था जनता की निस्वार्थ सेवा का आदर्श।[18]

तिलक की राष्ट्रीयता पुनरूत्थानवादी और पुनर्निर्माण वादी थी। उन्होंने वेदों और गीता से आध्यात्मिक शक्ति तथा राष्ट्रीय उत्साह ग्रहण करने का संदेश दिया और भारत की प्राचीन स्वस्थ परम्पराओं के आधार पर भारतीय राष्ट्रवाद की स्थापना करना चाहा। 13 दिसंबर 1919 'मराठा' के अंक में उन्होंने लिखा– ''सच्चा राष्ट्रवादी पुरानी नींव पर ही निर्माण करना चाहता है। जो सुधार पुरातन के प्रति घोर असम्मान की भावना पर आधारित है, उसे सच्चा राष्ट्रवादी रचनात्मक कार्य नहीं समझता। हम अपनी संस्थाओं को अंग्रेजीयत के ढांचे में नहीं ढालना चाहते, सामाजिक तथा राजनीतिक सुधार के नाम पर हम उनका अराष्ट्रीयकरण नहीं करना चाहते।''[19]

उन्होंने राष्ट्रवाद को मनोवैज्ञानिक धारणा बताया। उन्होंने कहा कि प्राचीन काल में आदिम जातियों के मन में अपने कबीलों के प्रति जो भक्ति रहती थी उसी का आधुनिक नाम राष्ट्रवाद है। इस राष्ट्रवाद का संबंध तीव्र संवेगों और अनुभूतियों से होता है। पहले जो आत्मिक प्रभाव और लगाव एक क्षेत्र विशेष तक सीमित थे, वे अब राष्ट्रवाद के अंतर्गत सम्पूर्ण राष्ट्र में व्याप्त हो गए है। यही कारण है कि आज राष्ट्रवाद की भावना किसी क्षेत्र विशेष के प्रति नहीं वरन् सम्पूर्ण राष्ट्र के प्रति अनुभव की जाती है। जो राष्ट्रवाद राष्ट्रीय एकता पर आधारित होता है वही सच्चा और स्वस्थ राष्ट्रवाद है। तिलक की मान्यता थी कि विभिन्न विचारधाराओं, जाति–भेदों, अस्वस्थ मत–मतान्तरों आदि के कारण देश की राष्ट्रीयता की भावना उस तेजी से नहीं पनप सकती जिस गति से वह समान भाषा, समान धर्म, समान संस्कृति वाले पनप सकती है। इसीलिए उन्होंने भारत की राष्ट्रीय एकता के लिए आध्यात्मिक और मनोवैज्ञानिक तत्वों पर बारम्बार बल दिया। ये तत्व प्राचीनकाल से ही भारत में विद्यमान थे पर अब आवश्यकता है फिर से उन्हें जगाने और संगठित करने की।

तिलक के राष्ट्रवाद के विकास में सार्वजनिक उत्सवों को महत्वपूर्ण स्थान दिया। उन्होंने गणपति उत्सव और शिवाजी महोत्सव मनाना शुरू किये। उनका कहना

था कि उत्सव प्रतीक का काम करते है जिनसे राष्ट्रवाद की भावना पनपती है। उत्सवों का दोहरा महत्व है– एक ओर तो इनके माध्यम से एकता की भावना अभिव्यक्त होती है और दूसरी ओर उत्सवों में भाग लेने वाले व्यक्ति यह अनुभव करते है कि उनकें संगठन और एकता को किसी श्रेष्ठतर कार्य में लगाया जा सकता है। राष्ट्रीय उत्सव, राष्ट्रगान, राष्ट्रध्वज आदि देशवासियों के संवेगों और भावों में तीव्रता लाते है तथा उनकी राष्ट्रवादी भावना को प्रस्तुत नहीं होने देते। इसे राष्ट्रवाद का प्रतीकात्मक प्रदर्शन कहा जा सकता है, जिससे सांस्कृतिक अभिवृद्धि होती है और समूह राष्ट्रवाद का निर्माण होता है।

तिलक की दृष्टि में राष्ट्रवाद का स्वरूप आर्थिक भी हैं। उन्होंने राष्ट्र की गरीबी का मुख्य कारण यह माना कि देश से विपुल धनराशि विदेशों में चली जा रही है। ''दादाभाई नौरोजी के धन का निष्कासन'' के सिद्धांत से वे पूर्णतः सहमत थे। तिलक ने केसरी में लिखा था– ''भारत का कच्चा माल विदेशों से पक्का बनकर जब लौटता है तो भारत में इस प्रकार लूट की जाती है और देश की पूंजी को किस तरह इंग्लैण्ड पहुंचा दिया जाता है। भारत में जो स्वदेशी आंदोलन चला वह आर्थिक दृष्टि से देश के प्रारंभिक पूंजीवाद की वृद्धि और विस्तार का आंदोलन था।'' तिलक ने स्पष्ट शब्दों में स्वीकार किया कि जब तक देश की राजनीतिक शक्ति विदेशी हुकूमत के हाथ में है तब तक देशी उद्योग धंधों को प्रोत्साहन मिलना संभव नहीं है।

तिलक जी राष्ट्रीय एकता के लिए सभी धर्मों के अनुयायियों के लिए आदर भाव रखते थे। यही कारण था कि तत्कालीन मुस्लिम नेताओं विशेषतः शौकत अली, हजरत मोहानी ने उन्हें अपना राजनीतिक गुरू स्वीकार किया था[20] तथा जिन्ना, अंसारी और हसन इमाम ने उनकी राष्ट्रवादी भावना की प्रशंसा की थी।

तिलक को प्रायः राजनीति में उग्रवादी परन्तु सामाजिक सुधारों में नरम दलीय व्यक्ति माना जाता है। उन्होंने सम्मति आयु के विधेयक 1891 का विरोध किया परन्तु यह उन्होंने इसलिए किया कि विदेशियों को समाज सुधार के लिए कानून बनाने का अधिकार नहीं है। उनका विचार था कि समाज सुधार, लोकमत को शिक्षित करने से ही हो जाते है। वे विदेशी शासकों, नौकरशाही के लोगों को इस क्षेत्र में हस्तक्षेप नहीं कराना चाहते थे। उनका विश्वास था कि यदि देश को पहले राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त हो जाती है तो स्वदेश सरकार स्वतः ही सामाजिक सुधारों की समस्या का हल ढूंढ लेगी। वे राजनीतिक सुधार को पहली प्राथमिकता देते थे।[21]

अमृतसर कांग्रेस अधिवेशन में यह निर्णय लिया गया कि कांग्रेस प्रांतीय सभाओं के लिए चुनाव लड़ेगी जिसके लिए चुनावी घोषणा पत्र अप्रेल 1920 में तिलक ने ही तैयार किया था। इसमें सामाजिक पुर्नस्थना की रूपरेखा भी प्रस्तुत की गई कि कांग्रेस लोकतांत्रिक दल प्रत्येक भारतीय को धार्मिक स्वतंत्रता तथा सामाजिक न्याय प्रदान करने की घोषणा करता है। इसमें उनके सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक विचारों का सार है। उनके इन विचारों में भावीं स्वतंत्र भारत की एक रूपरेखा है। इस घोषणा पत्र को इतिहासकार तिलक का वसीयतनामा कहते है। यह घोषणा पत्र उनकी व्यावहारिक, परिपक्व राजनीतिक बुद्धिमता एवं प्रतिमा का प्रतीक है। इसके द्वारा उसने घोषणा किया कि स्वतंत्रता भारत की प्रथम आवश्यकता है। तिलक जी का इस घोषणा पत्र प्रकाशन के तीन माह 10 दिन बाद 1 अगस्त 1920 को देहावसान हो गया। वे स्वतंत्र भारत को देखे बिना इस संसार से विदा कर गए।[22] उन्हें श्रद्धांजलि देते हुए महात्मा गांधी ने उन्हें आधुनिक भारत का निर्माता और जवाहर लाल नेहरू ने भारतीय क्रांति के जनक की उपाधि दी।[23]

डॉ. पट्टाभि सीतारमैया ने गोखले और तिलक की तुलना की है। वह लिखते है ''तिलक और गोखले दोनों ही प्रथम श्रेणी के देशभक्त थे, दोनों ने जीवन में भारी बलिदान किए। परन्तु दोनों के स्वभाव भिन्न थे। गोखले उदारवादी तो तिलक उग्रवादी थे। गोखले का विचार विद्यमान संविधान का सुधार करना था, तिलक का उसका पुनर्निर्माण, गोखले नौकरशाही से मिलकर काम करना चाहते थे, तिलक उससे लड़ना चाहते थे। गोखले का विश्वास था कि जहां तक हो सके सहयोग दो और जहां आवश्यक हो लड़ो, तिलक की नीति प्रतिरोध करने की थी। गोखले का आदर्श प्रेम और सेवा था, तिलक का सेवा तथा त्याग, गोखले विदेशी को जीतना चाहते थे और तिलक उसे प्रतिस्थापित करना। गोखले औरों का सहायता करना चाहतक थे पर तिलक केवल अपनी सहायता, गोखले ऊंची श्रेणी और बुद्धिजीवियों पर निर्भर थे और तिलक लाखों की जनता पर। गोखले का युद्ध क्षेत्र परिषद का सदन था, तिलका का ग्राम का मण्डप ,गोखले का माध्यम अंग्रेजी, तिलक का मराठी, गोखले का उद्देश्य स्व शासन था' तिलक का स्वराज्य। गोखले अपने समय के अनुसार थे तिलक अपने समय से बहुत आगे।''[24]

निष्कर्ष

इस प्रकार हम अध्ययन से पाते है कि बाल गंगाधर तिलक जी का जीवन कर्तव्य बोध से व्याप्त था। स्वतंत्रता के मार्ग पर आने वाली यातनाओं एवं कष्टों को झेलने की उनमें आध्यात्मिक कर्मयोगी की अपार शक्ति थी। उन्होंने उदारवादियों की प्रार्थना प्रतिवेदनों की नीति के स्थान पर उग्र राष्ट्रवाद एवं आत्मसम्मान से पूर्ण नीति का प्रतिपादन करके भारत को स्वराज्य के मार्ग पर अग्रेषित किया था। उन्होंने मध्यम वर्ग व श्रमिक वर्ग के लोगों को राजनीति में सम्मिलित कर राष्ट्रीय आंदोलन को जन आंदोलन का रूप दिया। उनके राजनीतिक चिंतन को लोकतांत्रिक यथार्थ वाद कहा जाता है। तिलक जी प्रथम राष्ट्रवादी नेता थे जिन्होंने जनता से निकट सम्बन्ध स्थापित करने का प्रयत्न किया और इस दृष्टि से वह महात्मा गांधी के अग्रगामी थे।

यद्यपि महात्मा गांधी ने गोखले को अपना राजनीतिक गुरू स्वीकार किया था, फिर भी वे तिलक के विचारों से, उनके त्याग तथा चरित्र के अनन्य प्रशंसक थे। उन्होंने स्वीकार किया कि मैंने अन्तरात्मा का मूल्य लोकमान्य तिलक जी से सीखा है। उनका कथन है कि ''जहां तक मैं तिलक के व्यक्तित्व को समझ सका हूँ, वे

भगवद्गीता के शब्दों में स्थित प्रज्ञ और त्रिगुणातीत थे। मृत्यु को सम्मुख देखकर भी वे पूर्णतः अविचलित रहे। सच्चे अर्थों में वे राजर्षि थे।''

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *श्रीवास्तव, शिवशंकर, भारतीय संस्कृति, शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद, 2010, पृ. 240*
2. *वर्मा, विश्वनाथ प्रसाद एवं दुबे, सत्यनारायण (अनु.), आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतन, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा, 1971, पृ. 5*
3. *राय, कौलेश्वर, आधुनिक भारत, किताब महल, इलाहाबाद, 2012 पृ. 418*
4. *ग्रोवर, बी. एल., मेहता एवं यशपाल, आधुनिक भारत का इतिहास एक नवीन मूल्यांकन, एस. चंद एंड कंपनी, नई दिल्ली, 2016, पृ. 330*
5. *महाजन, आधुनिक भारत का इतिहास, एस. चंद एंड कंपनी, नई दिल्ली, 2000, पृ. 595–596*
6. *सिंह, सत्यवीर, भारत की आजादी में क्रांतिकारियों का योगदान, यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2016, पृ. 16*
7. *पुरोहित, बी. आर., प्रतिनिधि राजनीतिक विचारक एवं विचार धाराएं, म. प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल, 2004, पृ. 73*
8. *महाजन, विद्याधर, पूर्वोक्त, पृ. 596*
9. *पूर्वोक्त, पृ. वही*
10. *पुरोहित, बी. आर, पूर्वोक्त पृ. वही*
11. *ग्रोवर, बी. एस., मेहता एवं यशपाल पूर्वोक्त पृ. 330*
12. *महाजन, विद्याधर, पूर्वोक्त, पृ. 596*
13. *पुरोहित, बी. आर, पूर्वोक्त पृ. 75*
14. *पूर्वोक्त, पृ. 73*
15. *महाजन, विद्याधर, पूर्वोक्त, पृ. 597*
16. *पुरोहित, पूर्वोक्त, पृ. 75*
17. *ग्रोवर, बी. एस., पूर्वोक्त, पृ. 331*
18. *महाजन, पूर्वोक्त, पृ. 598*
19. *पुरोहित, पूर्वोक्त, पृ. 83*
20. *पूर्वोक्त, पृ. वही*
21. *ग्रोवर, बी.एल., पूर्वोक्त, पृ. 331*
22. *पुरोहित, पूर्वोक्त, पृ. 86*
23. *सिंह, सत्यवीर, पूर्वोक्त, पृ. 10*
24. *सीता रमैया, पट्टाभि, द हिस्ट्री आफ द कांग्रेस, 1935 संस्करण, पृ. 165–66*